भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक – साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : ११

सोमवार १६ दिसम्बर, '६८

अन्य पृष्ठों पर

भूखा शिक्षक —सम्पादकीय १३०

ईश्वर की सृष्टि, मनुष्य का पुरुषार्थ —विनोबा १३१

नव-निर्माण के नये आयाम — अण्णा सहस्रबुद्धे १३३

आन्दोलन के समाचार १३४

राजस्थान का आह्वान

दक्षिण पूर्व एशिया में गांधी-विचार

संदेशवाहक टोली

पटना में मतदान-शिक्षण-अभियान

परिशिष्ट

"गाँव की बात"

सम्पादक
राधाकृष्ण

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी–१, उत्तर प्रदेश
फोन : ४२८५

राजनीतिक सत्ता : साध्य नहीं, साधन

स्वराज्य का मतलब है सरकारी नियंत्रण से स्वतंत्र होने की लगातार कोशिश, चाहे सरकार विदेशी हो या राष्ट्रीय। स्वराज्य की सरकार में यदि लोग जिन्दगी की हर चीजों के लिए सरकार का मुँह देखने लगें तो यह एक खेदजनक हालत होगी।१

स्वराज्य निर्भर करता है हमारी आन्तरिक शक्ति पर, बड़ी-से-बड़ी कठिनाइयों से जूझने की हमारी ताकत पर। सच पूछिए तो वह स्वराज्य, जिसे पाने के लिए अनवरत प्रयत्न और जिसे बचाये रखने के लिए सतत जागृति नहीं चाहिए, स्वराज्य कहलाने लायक ही नहीं है।२

शासन जहाँ विदेशी लोगों के हाथ में रहता है, तो जो कुछ लोगों तक पहुँचता है वह ऊपर से आता है। इस तरीके के कारण लोग बराबर मुहताज होते चले जाते हैं। जहाँ शासन नीचे तक फैला हुआ और लोगों की मर्जी पर कायम रहता है वहाँ सब चीजें नीचे से ऊपर की तरफ जाती हैं और इसीलिए वह ज्यादा दिन टिकता है। वह सुन्दर होता है और लोगों को मजबूत बनाता है।३

मेरी दृष्टि में राजनीतिक सत्ता अपने-आप में साध्य नहीं है, परन्तु जीवन के प्रत्येक विभाग में लोगों के लिए अपनी हालत सुधार सकने का एक साधन है। राजनीतिक सत्ता का अर्थ है राष्ट्रीय प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रीय जीवन का नियमन करने की शक्ति। अगर राष्ट्रीय जीवन इतना पूर्ण हो जाता है कि वह स्वयं अपना नियमन कर ले, तो फिर किसी प्रतिनिधित्व की आवश्यकता नहीं रह जाती। उस समय ज्ञानपूर्ण अराजकता की स्थिति हो जाती है। ऐसी स्थिति में हर एक अपना राजा होता है। वह ऐसे ढंग से अपने पर शासन करता है कि अपने पड़ोसियों के लिए वह कभी बाधक नहीं बनता। इसलिए आदर्श अवस्था में कोई राजनीतिक सत्ता नहीं होती, क्योंकि कोई राज्य नहीं होता। परन्तु जीवन में आदर्श की पूरी सिद्धि कभी नहीं होती। इसीलिए थोरो ने कहा कि जो सबसे कम शासन करे वही उत्तम सरकार है।४

मेरी राय में स्वराज्य की जो तालीम हमें चाहिए वह केवल इतनी ही है कि हम सारी दुनिया से अपनी रक्षा करने की योग्यता हासिल करें और पूर्ण स्वतंत्रता से अपना जीवन जीने की क्षमता प्राप्त करें—फिर वह स्वराज्य कितना ही दोषपूर्ण क्यों न हो। अच्छी सरकार स्वराज्य सरकार का स्थान नहीं ले सकती।५

अगर मैं मानव समाज को यह विश्वास करा सकूँ कि प्रत्येक मनुष्य—भले वह शरीर से कितना ही दुर्बल क्यों न हो, अपने स्वाभिमान और स्वतंत्रता का रक्षक है, तो मेरा काम पूरा हो जायेगा।६

(१) "यंग इण्डिया", ६ अगस्त '२५, पृष्ठ : २७६ (२) हिन्दी "नवजीवन", ८ दि० '२७ (३) "हरिजन", २ नवम्बर '४७, पृष्ठ : ३९२ (४) "सिलेक्शन्स फ्रॉम गांधी", पृष्ठ : ४१ (५) "महात्मा, लाइफ ऑव मोहनदास करमचन्द गांधी", खण्ड : २, पृष्ठ : २४ (६) "महात्मा, लाइफ ऑव मोहनदास करमचन्द गांधी" खण्ड : ६, पृष्ठ : ३३६।

www.vinoba.in

भूखा शिक्षक

कौन नहीं मानेगा कि शिक्षक भूखा है ? और इससे भी किसे इनकार होगा कि भूखा शिक्षक देश के लिए खतरा है ? उ० प्र० के शिक्षकों को इस वक्त ये बातें जुलूस में नारे लगा-लगाकर बतानी पड़ रही हैं। शिक्षक भूखा है। पुलिस का सिपाही भूखा है। दफ्तर का बाबू भूखा है। रिक्शेवाला भूखा है। दस्तकार भूखा है। छोटा किसान भूखा है। खेत का मजदूर भूखा है। शिक्षित युवक भूखा है। कौन कहेगा कि ये भूखे नहीं हैं, और इनका भूखा रहना देश के लिए खतरा नहीं है ? दूसरी ओर अफसर भूखा है ऊँची कुर्सी का। मालिक भूखा है दौलत का। नेता भूखा है गद्दी का। क्या कोई कह सकता है कि इनकी भूख देश के लिए कम भयंकर खतरा है ?

ढूँढ़ना पड़ेगा कि अब इस देश में कौन बच गया है जो भूखा नहीं है ? भूख चाहे रोटी-कपड़े की हो, और चाहे सत्ता-सम्पत्ति की या और किसी चीज की, अतृप्त भूख खतरा तो होती ही है। अतृप्त भूख जलाने में आग से भी तेज होती है। आज हमारा देश दोनों तरह की भूखों का शिकार है। पहली भूख देश को तोड़ रही है, और दूसरी देश को जला रही है।

भूखे लोगों की सरकार से यह माँग है कि वह उनकी भूख शान्त करे। सरकार के सिवाय माँग भी किससे की जाय ? शायद माँग करनेवालों को यह पता नहीं है कि सरकार के पास केवल सत्ता है, शक्ति नहीं। सत्ता से दमन हो सकता है, किन्तु सृजन के लिए तो शक्ति चाहिए। अगर वह शक्ति सरकार के पास होती तो इतने वर्षों में देश की बुनियादी समस्याएँ कुल हल होती दिखाई देतीं। क्या किसीको दिखाई दे रही हैं ? जब गरीबी के साथ विषमता भी जुड़ जाती है तो दोनों दुगुनी असह्य हो जाती हैं। पिछले वर्षों में विषमता बहुत बढ़ी है। शिक्षक गरीब तो हैं ही, पर उनमें विषमता भी कम नहीं है। प्राइमरी स्कूल से लेकर विश्व-विद्यालय तक के शिक्षकों में विषमता की कई सीढ़ियाँ हैं। सरकारी, गैर-सरकारी शिक्षकों में जबरदस्त खाई है। एक ही विभाग में काम करनेवाले शिक्षकों और शिक्षा के शासकों में बहुत फासला है।

भूख का हल माँग में नहीं है, बल्कि यह जान लेने में है कि आज की सामाजिक और सरकारी व्यवस्था में भूख का हल है ही नहीं। जो व्यवस्था भूख को पैदा करती है और विषमता को बढ़ाती है, वही उन्हें मिटा कैसे सकती है ? यह बात साफ समझ में आ जायगी अगर हम पूरे देश को सामने रखकर सोचें। लेकिन अगर समाज के हर टुकड़े को अलग रखकर सोचेंगे तो सिवाय नारे लगाने और सरकार से माँग करने के दूसरा कुछ सूझेगा नहीं। इतना ही नहीं, एक की माँग दूसरे की माँग से इस तरह टकरायेगी कि किसी भी माँग की पूर्ति का रास्ता नहीं निकलेगा। शिक्षक कहता नहीं लेकिन चाहता है कि फीस बढ़े; दूसरी ओर विद्यार्थी किसी तरह राजी नहीं होता कि फीस बढ़े। इसके अलावा जब बाजार समाज और सरकार दोनों की काबू से बाहर हो गया है तो माँगें पूरी होकर भी पूरी नहीं होंगी। माँगों और मूल्यों में दौड़ होती रहेगी। मूल्य जीतेंगे, माँगें हारेंगी, और माँग करनेवालों के हाथ निराशा के सिवाय दूसरा कुछ नहीं आयेगा।

जब भूख के साथ चेतना जुड़ती है तो भूखा व्यक्ति भिखारी न रहकर क्रान्तिकारी बन जाता है। भिखारी की भूख अभिशाप और अपमान है, जब कि क्रान्तिकारी की स्वेच्छा से स्वीकृत भूख उसका गौरव है। उस भूख में ज्वालामुखी की शक्ति होती है। भला यह शक्ति सरकार के कानून या नौकरशाही की योजना में कैसे आ सकती है ? जब विनोबा ने शिक्षक के सामने 'आचार्यकुल' की बात रखी थी तो संभवतः उनके मन में यह आशा जरूर रही होगी कि शिक्षकों का चेतन समुदाय अपनी चेतना को भूख के साथ जोड़कर कुछ नया चिंतन करेगा, और समाज को चिंताओं से मुक्त करने की दिशा में नया कदम उठायेगा। लेकिन शायद शिक्षक के सामने भूख की चिंता के साथ-साथ राजनीति का चक्कर भी है। क्या शिक्षक आज तक यह नहीं समझ सका है कि राजनीति बराबर नये चक्कर पैदा करती जायगी, और शिक्षक उसमें फँसता जायगा, और समस्या जहाँ थी वहीं रह जायगी ?

आज चाहे जो हालत हो, लेकिन भूख तब मिटेगी जब भूखे लोग अपनी भूख मिटाने के लिए मिलकर खुद सामने आयेंगे। ग्रामदान इसी सामूहिक पुरुषार्थ के लिए ग्रामीण जनता का आवाहन कर रहा है। शिक्षक इस व्यापक पुरुषार्थ का अगुआ क्यों नहीं बन पा रहा है ? क्या वह सामान्य भूखों की जमात से अलग अपने को विशिष्ट भूखों की कोटि में गिनना चाहता है ? कहने को तो हजार-दो हजार पानेवाले लोग भी अपने को भूखा कहते हैं और हड़ताल की धमकी देते हैं ! लेकिन उन भूखों की 'जाति' दूसरी है। शिक्षक के लिए ग्रामदान द्वारा प्रस्तुत यह बहुत बड़ा अवसर है, जो स्वतंत्रता के बाद पहली बार सामने आया है, कि वह समाज में अपना स्थान तय करे, और उसके अनुरूप अपना आचार विकसित करे।

एक बात और है। हम चाहे जो करें, अभी बरसों तक हमारा देश गरीबी से मुक्त नहीं हो सकेगा। गरीबी से लड़ाई लड़ते हुए हम इतना तो फौरन कर सकते हैं कि हम गरीबी बाँटें और हमारे हिस्से जो आये उसमें ही गुजर करने के लिए तैयार हों। इस देश में गरीबी से लड़ाई का अर्थ है समता की लड़ाई। अभी तक हमने समता का इतना ही अर्थ समझा है कि किस तरह ऊपरवाले के मुकाबिले पहुँच जायँ, न कि नीचेवाले के साथ एक हो जायँ। इसे मत्सर कहते हैं, समता नहीं। अगर हमें समता प्रिय है तो विषमता से मुक्ति सबसे पहले सबसे नीचेवाले को दिलाने की कोशिश करनी चाहिए।

शिक्षक अपने स्कूल में 'नौकर' हो गया है, और बाहर सड़क पर 'एजिटेटर'। कब और कहाँ वह 'टीचर' है ? शिक्षक की समस्याओं का समाधान उसी दिन शुरू हो जायगा जिस दिन उसमें अपने सही 'रोल' की प्रतीति पैदा होगी। उसका काम है नयी चेतना का समर्थ वाहक बनना; नारे लगाना और धक्के खाना नहीं। शिक्षक भूखा है, पर वह सचेत कब होगा ? •

www.vinoba.in

ईश्वर की सृष्टि, मनुष्य का पुरुषार्थ

प्रश्न : ईश्वर ने ही सारी दुनिया को रचा है और सब साधन उपलब्ध कराये हैं, किन्तु हम उस नियंता के नियंत्रण में नहीं चल रहे हैं। तो फिर वह अपनी रचना समेट क्यों नहीं लेता ? आखिर वह इस रचना को क्यों जमाये बैठा है ?

विनोबा : यह (प्रश्नकर्ता) काम करते-करते थक गया दीखता है; तो मुक्त हो जाना चाहता है। इसलिए पूछ रहा है कि ईश्वर अपनी माया समेट ले तो अच्छा होगा। अगर माया समेटनी हो तो उसके लिए उसको योजना करनी होगी। तो मान लीजिए, यह आपका मध्यप्रदेश है। कल यहाँ भूकंप आ गया और सब जगह पानी-पानी हो गया तो ग्रामदान का मसला हल हो जायेगा। यह बात हुई है, जब मारवाड़ तैयार हुआ। कहते हैं कि यह सारा, मारवाड़ से लेकर ऊपर तक बहुत बड़ा समुद्र था और हिमालय दीखता नहीं था, उसके ऊपर से पानी जाता था। भूकंप आया और सारा समुद्र सिन्ध के ऊपर खिसक गया, हिमालय ऊपर आया और यह सारा रेगिस्तान तैयार हुआ। ऐसी घटना हुई है। और इन भाई जैसे प्रार्थना करनेवाले लोग निकलें तो फिर हो भी सकती है !

प्रश्न : ग्रामों के जो व्यक्ति जड़ हैं, उनका हृदय-परिवर्तन कैसे हो ? क्योंकि "मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहि विरंचि सम।"

विनोबा : इन्होंने तुलसीदास का आधार लेकर पूछा कि गाँव में जो व्यक्ति जड़ हैं, उनका हृदय-परिवर्तन कैसे करें ? "मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहि विरंचि सम।" विरंचि के समान गुरु मिले तो भी मूरख के हृदय में परिवर्तन नहीं होता। अब यह तो तुलसीदास को ही पूछना चाहिए कि अगर ऐसा है तो आपने रामायण किसके लिए लिखा ? सज्जनों को उसकी जरूरत नहीं और मूर्खों को उसका उपयोग नहीं। तो इतना सारा क्यों लिखा है ? ऐसा है कि ऐसे वचनों का आत्यंतिक अर्थ नहीं निकालना चाहिए। जो जड़ होता है उसका हृदय खराब होता है, ऐसा नहीं। उसकी बुद्धि मन्द होती है। जिसकी बुद्धि मन्द होती है उसको बुद्धिमान मनुष्य समझा देगा तो वह समझ जाता है। जिसका हृदय खराब है उसका हृदय-परिवर्तन करना होगा। खराब यानी कुछ दोष हो। दोष 'निगेटिव' होते हैं, 'पाजिटिव' नहीं। उनमें आक्रमण करने की शक्ति नहीं होती। अन्धकार में आक्रमण करने की शक्ति नहीं है, प्रकाश में है। टार्च आया तो अन्धकार एकदम खतम हो जाता है। इसलिए एक व्याख्यान में मैंने कहा था कि जहाँ अत्यन्त अन्धकार होता है वहाँ टार्च को उत्साह आता है। अगर अन्धकार सम्मिश्र हो तो टार्च को उतना उत्साह नहीं आता। जिसका हृदय मलिन है उसका, जिसका हृदय शुद्ध है उससे स्पर्श होता है तब मलिनता दूर हो जाती है। वाल्मीकि की कहानी है। वाल्मीकि महापापी और नारद शुद्ध हृदय के थे। तो उनके स्पर्श से वाल्मीकि का हृदय-परिवर्तन हुआ।

प्रश्न : "असन्तुष्टाः द्विजाः नष्टाः" यह व्याख्यान हमने एक जगह पढ़ा है। आपने इसको "असन्तुष्टाः द्विजाः कम्युनिस्टाः" किया है। केरल और बंगाल की स्थिति इसी तरह की हो गयी है। आजकल की शिक्षा के अनुसार जब शत-प्रतिशत लोग शिक्षित हो जायेंगे तो क्या इन शिक्षित लोगों का झुकाव कम्युनिज्म की ओर नहीं होगा ?

विनोबा : जरूर होगा। क्योंकि उनको उद्योग करने की तालीम नहीं मिलती, उद्योग करने का शौक नहीं होता। वे नौकरी चाहते हैं। यह उनको मिलेगी नहीं। तो उस हालत में वे असन्तुष्ट होंगे और कम्युनिस्ट बनेंगे। इसलिए मैं इन लोगों को हमेशा कहता हूँ कि आपकी कांग्रेस की सरकार है, लेकिन आपने कम्युनिस्ट बनाने के कारखाने खोल रखे हैं। ये सारे स्कूल और कालेज कम्युनिस्ट बनाने के कारखाने हैं। वहाँ से शिक्षित होकर बाहर आयेंगे और नौकरी चाहेंगे, नौकरी न मिली तो असन्तुष्ट होंगे और कम्युनिस्ट बनेंगे। इसलिए अच्छी शिक्षा नहीं देंगे तो क्या होगा ? समझने की बात है। एक तो असन्तुष्ट क्षीण होगा, निराश होकर खतम होगा। लेकिन अब दूसरा रास्ता चीन ने खोल दिया है, इसलिए "असन्तुष्टाः द्विजाः कम्युनिस्टाः", यही होगा !

प्रश्न : आम तौर पर कार्यकर्ता सामान्य वर्ग के होते हैं, फिर भी कार्यकर्ता की सक्षमता का माप क्या हो सकता है ?

विनोबा : ठीक बात है। हमारे कार्यकर्ता सामान्य वर्ग के हैं, जो असामान्य काम हैं उनको लेना नहीं चाहते। गाँव-गाँव में जाकर समझाना, इतना ही काम चाहते हैं। समझाने की योग्यता तो हो सकती है। उसके लिए उनको शिक्षा भी दी जा सकती है। शिविर आदि चलाये जा सकते हैं और यह भी हो सकता है कि एक बार शिविर में शिक्षा पाकर जो कार्यकर्ता काम के लिए गया उसको कुछ दिन के बाद दुबारा शिविर में शिक्षा मिले।

इस तरह से ज्ञान-प्रक्रिया, शिविर आदि समय-समय पर चलने चाहिए। ऐसा होगा तो कार्यकर्ता बुद्धिमान और कुशल बनेगा, काम अच्छा होगा। हमको असामान्य काम तो करना नहीं है, सामान्य काम ही करना है। इसलिए उतना ज्ञान, शिविर आदि में मिलेगा।

प्रश्न : बुद्धि और श्रम में समन्वय, हम सभी लोगों की आकांक्षा है, किन्तु हमारे बीच ही वह समन्वय नहीं सध रहा है, तो समाज में कैसे सधेगा ?

विनोबा : बहुत ठीक प्रश्न है। बुद्धि और श्रम का समन्वय नहीं है, क्योंकि ऐसी तालीम बचपन में हमको मिली नहीं और उसके लायक शरीर हमको मिला नहीं। लेकिन उसका सादा उपाय हमको गांधीजी ने बताया है कि, और कुछ नहीं होता तो कम-से-कम चरखा तो चलाओ। हम यह नहीं कह सकते कि हम चरखा नहीं चला सकते। उन्होंने हमारे लिए आसान औजार दे दिया। लेकिन उसके अलावा एक घण्टा भर खेत में निराई वगैरह काम कर सकते हैं। उसकी मजदूरी तो विशेष नहीं मिलेगी, लेकिन 'टोकन' के तौर पर, प्रतीक-रूप, चिह्न-रूप परिश्रम करें। उससे आज का समाज सन्तुष्ट होगा। उसके आगे के लोग इसके आगे आयेंगे।

क्रान्ति तो जनसमाज में होती है, उसका लाभ उठानेवाली अगर सरकार हो तो ७५ प्रतिशत काम हुआ ऐसा मानकर बाकी काम करना अपने लिए जरूरी है, ऐसा मानकर कानून बना सकती है, अगर सरकार की नीयत ठीक है। लेकिन सरकार कानून नहीं बनाती तो ७५ प्रतिशत काम हो चुका है, इससे सरकार बदलेगी। क्योंकि ७५ प्रतिशत लोगों का रंग सरकार पर होगा। और फिर सरकार उनके अनुसार कानून करेगी।

प्रश्न : प्रदेशदान के संकल्प के लिए आपका आशीर्वाद चाहते हैं।

विनोबा : मैं इतना ही कहूँगा कि उससे मुझे बहुत ही सन्तोष हुआ है। यद्यपि मैंने ऐसी प्रवृत्ति नहीं रखी थी कि बिहार के बाहर जाकर आग लगाऊँ। मैंने सोचा था कि पहले बिहार का काम पूरा करूँ और फिर बाहर जाऊँ। एक पोलिटिकल यूनिट पूरा हो जाता है तो भी बहुत होगा और इसके बाद बाहर असर होगा। लेकिन हमारा हनुमान है वह यह काम कर रहा है। हनुमान लंका में गये थे तब उनकी पूँछ को आग लगायी गयी तो उन्होंने हर घर पर जाकर अपनी पूँछ से घर को आग लगायी और पूरी लंका को आग लग गयी। वैसे हमारा हनुमान यानी जयप्रकाशजी हैं। उनकी पूँछ को आग लग गयी है। वे जहाँ-जहाँ जाते हैं वहाँ कहते हैं कि प्रांतदान करो। कहीं भी जिलादान हुआ हो तो फौरन वहाँ पहुँचते हैं और लोगों को उत्तेजना देते हैं।

मैं पहले इधर नहीं आया था, इसलिए आने का मैंने स्वीकार कर लिया। लेकिन बहुत खुशी हुई। कुछ अपरिचित चेहरे दिखे, कुछ पुराने परिचित देखने को मिले। बहुत अच्छा संकल्प आप लोगों ने किया। मैंने कई दफा कहा है कि जहाँ शुभ संकल्प होता है और सामूहिक संकल्प करते हैं, और जहाँ वह अपनी ताकत से ज्यादा होता है वहाँ भगवान मदद करने जाते हैं। तो हमको हमारे चित्त में अनुभव होना चाहिए कि हम भगवान का कार्य कर रहे हैं। हम कोई नहीं, नाचीज हैं, लेकिन भगवान का कार्य हमको मिला है। रात-दिन इसका भान रहे कि हम भगवान के औजार हैं। वाहन कौन बनता है, कह नहीं सकते।

गणेशजी इतने बड़े, इतना बड़ा उनका पेट, लेकिन चूहे को वाहन बनाया। क्योंकि चूहा छोटा है तो सुलभ प्रवेश मिल सकता है। तो हम-जैसे चूहे को उसने वाहन बनाया है। तो कार्य वह करेगा, चूहा नहीं करेगा। इसका निरन्तर भान कि हम जैसे-तैसे लोगों से वह काम ले रहा है, यह प्रतीति, यह अनुभव, यह भान प्रतिक्षण रहेगा तो मैं मानता हूँ कि पचासों अशुद्धियाँ हममें होंगी, वे ऐसी ही खतम हो जायेंगी। दिन-ब-दिन शुद्धि होगी। अभी लोकयात्रा से मुझे एक पत्र मिला है। उनकी यात्रा को एक साल पूरा हुआ। उस दिन वे सब इकट्ठी बैठी थीं, और चर्चा की थी। उस समय लक्ष्मी बोली थी कि मैंने जब यात्रा शुरू की तब पहले मुझमें बहुत कटुता थी। यह एक साल के बाद कुछ कम हुई है। कुछ मिठास आयी है, ऐसा लगता है। फिर भी कुछ कटुता बाकी है। वह इस यात्रा में जायेगी, ऐसा विश्वास हो रहा है। क्योंकि फल पकता है तो उसकी कटुता जाती है। यों कहकर उस असम की लड़की ने पंजाब में महाराष्ट्र के तुकाराम का एक कोटेशन कहा—'पिकलिया सेंद कडुपण गेले।' सेंद यानी फल जब कच्चा होता है तब कडुवा होता है। और पकता है तब मधुर होता है, ऐसा अनुभव आ रहा है। ऐसी बात उस लड़की ने सुनायी। बहुत आनन्द हुआ। क्योंकि भास है कि भगवान हमसे कार्य करवा रहे हैं। ऐसा हमको लगा और यह भान हमको रहा तो हममें जो कटुता होगी, दोष होंगे वे ऐसे ही खतम हो जायेंगे।

मध्यप्रदेश के कार्यकर्ताओं के बीच हुई चर्चा से, बलरामपुर : २०-११-'६८

काशी पर सर्व सेवा संघ का असर पड़े !

काशी नगर में शांति रह सकी तो शांति-सेना ने बहुत सफलता पायी। उस नगर पर सर्वोदय का असर होना चाहिए। काशी सर्व सेवा संघ का स्थान है। हम थोड़े हैं, भारत में सब जगह 'टैकल' नहीं कर सकते। पर हमारे केन्द्र-स्थान, खास स्थान (जैसे इंदौर, बड़ौदा, काशी, जयपुर आदि) जहाँ-जहाँ हैं वहाँ हमें शांति बनाये रखना चाहिए। वैसे देश में इस समय सब जगह असंतोष और अशांति है।

अभी गांधीजी के स्थान पर राजकोट में मोरारजी भाई पर वहाँ की लड़कियों ने पत्थर मारे। उन्हें मीटिंग में बोलने नहीं दिया। गुजरात जैसे प्रदेश में भी बहनें पत्थर मारें, मीटिंग न होने दें, यह सोचने की बात है। यह राजकोट में हुआ। गांधीजी का वह खास स्थान था। कलकत्ता में दंगे हों तो समझ में आता है। वहाँ हमारी कोई ताकत है नहीं। सर्व सेवा संघ के लोगों का असर हिंदुस्तान पर पड़े यह आशा ज्यादा होगी। पर काशी नगर पर संघ का असर पड़े यह आशा ज्यादा नहीं है।

डालटेनगंज, २-१२-'६८ —विनोबा

www.vinoba.in

नव-निर्माण के नये आयाम

समाज के नव-निर्माण के लिए प्रायोगिक आधार पर एक क्षेत्र का सुधार अथवा निर्माण करना आवश्यक है। उसके लिए जिस तरह से हमने वर्धा में सोचा है कि जिले में ५ लाख एकड़ जमीन का 'बंडिंग' हो, जितने नाले हैं, उन पर इंजिन-पम्प बिठाकर एक फसल के बदले दो फसल लेने का सोचा जाय, कुएँ गहरे करके उनसे भी सिंचाई का प्रबन्ध किया जाय, नदियों पर छोटी-मोटी लिफ्ट इरिगेशन की योजना भी बने, आधुनिक साधन तथा शास्त्रीय ज्ञान का भी विकास हो, उसी तरह का कार्यक्रम हरएक क्षेत्र के लिए सोचना चाहिए और मुख्यतः वह सरकार के जरिये चलना चाहिए।

इसके साथ-साथ सघन खेती तथा उद्योगों के माध्यम से नव-निर्माण की दृष्टि रखकर पढ़े-लिखे लोगों को ही उसमें हाथ बँटाना चाहिए और एक पदवीधारी व्यक्ति नौकरी करके माहवार ३०० से ४०० रु० की कमाई करता है, उतनी कमाई खेती और लघु उद्योग से एक परिवार में होनी चाहिए। इस तरह की खेती के लिए सुधरे हुए औजारों का उपयोग हो, यांत्रिक शक्ति का उपयोग किया जाय और आधुनिक विज्ञान का भी पूरा लाभ उठाया जाय। गाँव-गाँव में या तो किसी एक क्षेत्र में पाँच-दस युवक परिवारों का इस तरह का संगठन बने, उसके लिए पर्याप्त जमीन उपलब्ध करा दी जाय और उसके साथ-साथ कुछ लघु उद्योग वे पारिवारिक जिम्मेवारी पर चला सकें, जिनसे उन क्षेत्र की आवश्यकता की पूर्ति में मदद होती रहेगी—इस तरह से योजना बनानी चाहिए।

तफसील में किसी एक छोटे केन्द्र की योजना बनानी हो तो वह नीचे लिखे अनुसार बन सकती है। अलग-अलग क्षेत्र की दृष्टि से और अलग-अलग परिस्थिति के अनुसार उसमें आवश्यक परिवर्तन स्थानिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किये जा सकते हैं।

(१) यदि ५ या १० इस तरह के परिवार हों तो उनके लिए प्रति परिवार ५ से १० एकड़ तक खेती की जमीन उपलब्ध हो। उसमें ५ एकड़ जमीन सिंचाईवाली हो तो कुएँ आदि सहित जमीन के दाम प्रति परिवार १०,००० रु० तक गिने जा सकते हैं।

(२) आज की परिस्थिति में यह सम्भव नहीं है कि सब परिवार एक ही रसोई में खायें। इसलिए हरएक परिवार के लिए मकान आदि की सुविधा करनी होगी। प्रति परिवार एक सादी झोपड़ी के लिए ३००० रु० माने जायँ।

(३) इस केन्द्र में कुछ औजार सामुदायिक और कुछ व्यक्तिगत रखने पड़ेंगे। बीज-घर, अनाज-स्टोर तथा औजार-घर आदि खेती की चीजों के लिए सामुदायिक मकान बनेगा। इसके लिए भी प्रति परिवार २००० रु० तक खर्च होगा।

(४) यदि ५० एकड़ का कुल रकबा हो और उस पर १० परिवार काम करनेवाले हों तो सामुदायिक और व्यक्तिगत औजार-साधन मिलाकर प्रति परिवार ३००० रु० तक की पूँजी और लगानी होगी।

(५) कम-से-कम एक साल का खर्च चालू पूँजी के रूप में प्रति परिवार २००० रु० तक माना जायेगा।

(६) मोटे तौर पर इस तरह की योजना के लिए प्रति परिवार २०,००० रु० तक लगेंगे।

अपेक्षा यह रहेगी कि ये सारे परिवार अपनी जिम्मेवारी से कुछ व्यक्तिगत और कुछ सामुदायिक खेती करेंगे। बाहर का कोई मजदूर खेती में नहीं लगायेंगे। साथ ही काम का बँटवारा तथा फसल-योजना इस तरह से बनायी जायेगी कि यदि सालभर का हिसाब जोड़ा जाये तो प्रतिदिन ४ घण्टे से ज्यादा काम किसी व्यक्ति को न करना पड़े। एक परिवार में दो व्यक्ति काम करनेवाले रहेंगे और संभव है कि दो अवलम्बित रहेंगे।

खेती मिश्र-खेती रहेगी। अनाज की खेती के साथ-साथ दूध-उत्पादन, साग-भाजी तथा कुछ फल-बगीचा की दृष्टि से भी सोचा जायेगा। केन्द्र में दुग्ध-व्यवसाय रहेगा तो कुल व्यक्तियों की आधी संख्या तक मवेशी रखे जायेंगे।

इस तरह के केन्द्र में अन्न के साथ वस्त्र-उद्योग भी चलाया जा सकता है। सुथारी, लुहारी का उद्योग भी चल सकता है। बीज तथा अनाज-स्टोर के साथ आसपास के गाँवों के सहकार से एक शीतागार (कोल्ड स्टोरेज) भी चलाया जा सकेगा। हर चीज स्वावलम्बन की दृष्टि से ही बनेगी, ऐसा जरूरी नहीं है। कुछ चीजें बेचने के लिए भी बन सकती हैं।

इस तरह के केन्द्र में औसत ४ घण्टे के परिश्रम से और सुधरे हुए औजारों का उपयोग करके सालाना प्रति परिवार ३००० से ४००० रु० तक की आय हो सकेगी।

इस केन्द्र में ऐसी योजना भी बन सकती है, जिसका उपयोग चारों ओर के गाँववाले भी कर सकें, जैसे डाक्टर का उपयोग आसपास के गाँव को होता है। यहाँ के औषधि छिड़कने के यंत्र आसपास के गाँवों के लिए भी काम में आ सकते हैं। उसी तरह अनाज-भण्डार, शीतघर, लुहारी, बढ़ईगिरी, मरम्मत-वर्कशाप आदि का उपयोग सबके लिए हो सकेगा।

गांधी-जन्म-शताब्दि के कार्यक्रम में इस तरह के केन्द्र क्षेत्रों में खोले जायँ और एक बड़े क्षेत्र की योजना के साथ इनका अनुबन्ध किस तरह से बिठाया जाय, यह भी सोचा जाय। इस तरह के केन्द्र से यह अपेक्षा की जाती है कि यहाँ पाँच साल में जो सिद्ध होगा, उसका लाभ उस क्षेत्र में व्यापक रूप से हो सकेगा, लोग उन चीजों को अपना लेंगे।

उपरोक्त विचार को ध्यान में रखकर जनवरी १९६९ में सेवाग्राम में एक त्रिदिवसीय शिविर करने का सोचा गया है। जो उत्साही नवयुवक परिवार अथवा व्यक्ति इस तरह के प्रयोग में शामिल होने के इच्छुक हों वे नीचे के पते पर पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। पत्र-व्यवहार का पता : श्री नरेन्द्र भाई, द्वारा—गांधी स्मारक निधि, राजघाट, नयी दिल्ली—१

विनीत,

—अयणा सहस्रबुद्धे

पो० सेवाग्राम, जिला वर्धा (महाराष्ट्र)

आन्दोलन के समाचार

राजस्थान का आह्वान

देश के अन्य भागों की तरह राजस्थान के सर्वोदय-कार्यकर्ता भी स्वराज्य के बाद इन पिछले १५-२० वर्षों में पूज्य विनोबा के मार्गदर्शन में चल रहे सर्वोदय-आन्दोलन के जरिये जनता की शक्ति जागृत व संगठित करने का प्रयास करते रहे हैं।

हमारी आजादी की लड़ाई के नायक और राष्ट्र के कर्णधार गांधीजी बराबर हमारा ध्यान इस ओर खींचते रहे कि सच्चे माने में स्वराज्य तभी हुआ मानना चाहिए, जब देश के लाखों गाँवों का विकास हो और सबसे गरीब और दुःखी को उसका लाभ पहले मिले। इस सत्य को पहचानकर गांधीजी ने कल्पना की थी कि स्वतंत्र भारत में गाँव देश की प्राथमिक इकाई बनेगा। इस इकाई को और खेती तथा गाँवों के उद्योगों के विकास को प्राथमिकता दी जायेगी और फलस्वरूप हर इकाई अपने में भरी-पूरी, स्वाश्रयी और स्वायत्त, पर एक-दूसरे से सहकार के धागे में बँधी हुई, और सब मिलकर पूरे देश और अखिल मानवता से अनेक रूपों में जुड़ी हुई होगी। ग्राम-स्वराज्य का यह बापू का सपना अभी साकार होना बाकी है।

इस ग्राम-स्वराज्य की सिद्धि के लिए ही विनोबाजी ने भूदान-ग्रामदान का सबल कार्यक्रम देश को दिया है और यह सन्तोष क बात है कि कुल मिलाकर यह कार्यक्रम लक्ष्य की ओर बढ़ता जा रहा है। देशभर के ५॥ लाख गाँवों में से इस समय तक ७२ हजार गाँवों ने ग्रामदान को अपनी स्वीकृति दी है। अकेले बिहार में प्रदेश के कुल गाँवों के आधे से अधिक, यानी ३५ हजार गाँवों का ग्रामदान हो चुका है, जिसमें गंगा के उत्तर तट का लगभग २ करोड़ की आबादीवाला सारा उत्तर बिहार और उसके छः जिले शामिल हैं। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में दो जिले, तमिलनाड में एक, और मध्यप्रदेश में एक, इस तरह चार अन्य पूरे जिले ग्रामदान में आ चुके हैं; बिहार के अलावा उत्तर प्रदेश, उत्कल, तमिलनाड और महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं ने इन प्रदेशों में सम्पूर्ण ग्रामदान यानी 'प्रदेशदान' का लक्ष्य घोषित किया है।

राजस्थान में भी अब तक एक हजार से ऊपर ग्रामदान हो चुके हैं। पिछले दिनों हमारी शक्ति मुख्यतः शराबबन्दी के महत्त्वपूर्ण आन्दोलन में लगी रही, जिसका असरकारक परिणाम भी आया है। इससे निश्चय ही कार्यकर्ताओं का आत्म-विश्वास और शक्ति जगी है। अब पूज्य विनोबाजी ने राजस्थान के कार्यकर्ताओं को आवाहन किया है कि वे अपनी पूरी शक्ति से प्रदेश के सम्पूर्ण ग्रामदान के लक्ष्य की सिद्धि में जुट जायँ। प्रदेशदान का यह आवाहन हमारे लिए बड़ा प्रेरणादायी और प्रदेश के लिए कल्याणकारी है। शराबबन्दी सत्याग्रह के तुरन्त बाद कार्य-समिति ने भी स्वाभाविकतया यही निश्चय किया था कि अब फिर से हमारी शक्ति शराबबन्दी को सफलता तक ले जाने के साथ-साथ ग्रामदान-ग्राम-स्वराज्य के काम में लगनी चाहिए। क्योंकि यह निर्विवाद है कि हमारा बुनियादी काम ग्राम-स्वराज्य का है।

दुर्भाग्य से राजस्थान के अधिकांश भागों में भीषण अकाल की छाया पड़ी हुई है। इस विपत्ति में जनता की राहत और पशुधन की रक्षा के लिए यथाशक्ति सेवा-कार्य हाथ में लेना जरूरी है। दुष्काल के मुख में आये दिन पड़नेवाले राजस्थान के गाँवों की जो जन-धन व नीतिधर्म की हानि, और निस्सहायता का दुःखद दृश्य देखने में आता है वह ग्रामस्वराज्य के महत्त्व और उसकी अपेक्षा को और भी स्पष्ट करता है। सामुदायिक भावना के अभाव में गाँव दुष्काल के अभिशाप से अपने को बचा नहीं पाते और इस स्थिति में राहत भी ठीक लोगों के पास नहीं पहुँच पाती। अतः अन्य संकटों की तरह दुष्काल जैसे दैवी संकट के मुकाबले के लिए भी बापू का ग्रामस्वराज्य का विचार ही एकमात्र आधार है।

संघ की कार्य-समिति गांधी-शताब्दी के इस वर्ष में, प्रदेशदान के लिए पूज्य बाबा का यह सन्देश आन्दोलन को गतिशील बनाने के लिए एक शुभ लग्न एवं शुभ संकेत मानती है। इस लक्ष्य की ओर मनोयोग-पूर्वक सारी कार्यकर्ता-शक्ति एकजुट होकर लग जाय, ऐसा अवसर उपस्थित हुआ है। अतः कार्य-समिति बापू के 'ग्राम-स्वराज्य' में विश्वास रखनेवाले सब भाई-बहनों को अब बिना समय खोये, इस कार्य में लगने के लिए आवाहन करती है। हमारा विश्वास है कि ग्रामदान-कार्यक्रम से अकाल-राहत तथा शराबबन्दी के काम में भी तेजी आयेगी और लक्ष्य-प्राप्ति में मदद मिलेगी।

[राजस्थान समग्र सेवा संघ की कार्य-समिति द्वारा १७ अक्तूबर, '६८ की सभा में स्वीकृत प्रस्ताव]

१८ अप्रैल, '६९ : 'भूक्रान्ति-दिवस' तक समूचे छत्तीसगढ़ को ग्रामदान में लाने का निश्चय

अम्बिकापुर। आचार्य विनोबा भावे के आवाहन पर आगामी १८ अप्रैल, '६९ 'भू-क्रान्ति-दिवस' तक छत्तीसगढ़दान का निश्चय किया गया है। यह संकल्प यहाँ १८-१९ नवम्बर को मध्यप्रदेश गांधी-शताब्दी समिति द्वारा आयोजित छत्तीसगढ़ गांधी-शताब्दी सम्मेलन में भाग लेने हेतु एकत्रित कार्यकर्ताओं द्वारा लिया गया है।

छत्तीसगढ़ के संकल्प को पूर्ण करने के लिए जिला शताब्दी-समितियों को अधिक सक्रिय बनाने का सोचा गया है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र में सरगुजा, बिलासपुर, रायपुर, रायगढ़, दुर्ग और बस्तर जिले हैं। इन प्रत्येक जिले में अब तक क्रमशः ६७६, ८, ५५, ९, २४, १०७ ग्रामदान मिल चुके हैं। इन छः जिलों में कुल मिलाकर लगभग १९,००० गाँव हैं।

यह उल्लेखनीय है कि सबसे पहले सरगुजा जिले को ग्रामदान में लाने का प्रयत्न किया जा रहा है। २६ जनवरी तक पूरा जिला ग्रामदान में लाने की योजना कार्यान्वित की जा रही है। गांधी-स्मारक-निधि और रचनात्मक संस्थाओं के लगभग ६० कार्यकर्ता भाई-बहन अभियान में लगे हुए हैं। शासकीय अधिकारियों का सहयोग उल्लेखनीय है। जिले में इस अभियान का संयोजन संयुक्त रूप से सर्वोदय समिति सरगुजा, विनोबा-स्वागत समिति, छत्तीसगढ़ संभागीय ग्रामदान-प्राप्ति समिति और गांधी-शताब्दी समिति कर रही है। (सप्रेस)

दक्षिण-पूर्व एशिया में गांधी-विचार संदेशवाहक टोली

सिंगापुर में टोली पाँच दिन रुकी। वहाँ की भारतीय आबादी ने ही सबसे अधिक सहयोग टोली को दिया। पर टोली ने स्थानीय भारतीयों के माध्यम से वहाँ के लोगों से मेलजोल बढ़ाया, बातचीत की, साहित्य बेचा, प्रदर्शनी दिखाई और भारतीयों को बतलाया कि गांधी के सन्देश को सिंगापुर के घर-घर में पहुँचाने की जिम्मेदारी अब उनकी है। यह भी स्पष्ट कर दिया कि गांधी का सन्देश वे अपने कर्म और व्यवहार से ही दे सकेंगे। सिंगापुर में टोली का आतिथ्य किया श्री जुमाभाई ने। जुमाभाई रईस बोहरे हैं, लेकिन कृष्णभक्त हैं। हज के साथ तीन धामों की यात्रा कर चुके हैं और चौथे धाम जाना चाहते हैं। गांधीजी के सम्पर्क में रहे हैं और नेहरूजी के निकट भी रहे। सत्तर की उम्र है, पर गांधी के सन्देश को घर-घर पहुँचाने में पच्चीस बरस के युवक से भी अधिक उत्साही और सक्रिय रहे।

सिंगापुर से टोली मलयेशिया गयी। टोली का काम करने का तरीका यह है कि पहले वह दो में बँट जाती है। अग्रिम दल आगे जाकर वातावरण बनाता है और पिछला दल बने हुए खेत में सन्देश के बीज बोता है। मलयेशिया में टोली कुआलालुम्पुर, इपोह और पिनांग शहरों में घूमी। श्रीसंबन्धन ने हमारा आतिथ्य किया, वे मलयेशिया की सरकार के मंत्री हैं। विनोबा से मिल चुके हैं और उनसे अत्यधिक प्रभावित हैं। उनके परिवार के सहयोग से टोली ने मलयेशिया में अच्छा काम किया—खूब मिलना-जुलना, लोगों को समझना-समझाना और गांधी का सन्देश फैलाना।

मलयेशिया से टोली गयी थाइलैण्ड, और थाईलैण्ड से पहुँची है कम्बोडिया। टोली बुद्ध के देश में है और उन्हीं के भिक्खुओं का रास्ता उसका रास्ता है। अब तक उसने कुल ३५ हजार रुपयों का गांधी-साहित्य लोगों को दिया है। उसके पास किताबें कम पड़ रही हैं। मद्रास से और साहित्य जा रहा है। टोली डेढ़ महीने से काम में लगी है, उसे डेढ़ महीना और लगेगा।

—प्रभास जोशी

मुंगेर के तारापुर प्रखण्डदान की घोषणा का समारोह सम्पन्न

विगत २५ नवम्बर को तारापुर प्रखण्ड-दान की एक विराट सभा तारापुर प्रखण्ड कार्यालय के प्रांगण में श्री वासुकीनाथ राय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सभा में श्री भवानी भाई ने प्रखण्डदान के सिलसिले में आज तक के हुए प्रयत्नों की चर्चा की तथा बताया कि निष्पत्ति-स्वरूप प्रखण्ड की ८० प्रतिशत जन-संख्या तथा ७५ प्रतिशत भूमि ग्रामदान में सम्मिलित हुई है। सभा ने सर्व-सम्मति से तय किया कि इस प्रखण्ड में ग्राम-दान-पुष्टि का काम तत्काल शुरू किया जाय, जिससे गाँवों में ग्राम-स्वराज्य का साकार रूप प्रकट हो सके।

घर-घर साहित्य पहुँचाने का प्रयास

श्री सत्यपाल सिंह से प्राप्त सूचनानुसार कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश) जिला सर्वोदय मंडल गाँव-गाँव में साहित्य पहुँचाने का उल्लेख-नीय प्रयास कर रहा है। पिछले इस प्रयास में रु० १५४१-८५ का साहित्य बिका। 'भूदान-यज्ञ' के १६, 'नयी तालीम' के ८ 'ग्राम-भावना' के ८ तथा अंग्रेजी 'न्यूज लेटर' के ५ ग्राहक बनाये गये।•

खादी और ग्रामोद्योग राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं

इनके सम्बन्ध में पूरी जानकारी के लिए

पढ़िये

खादी ग्रामोद्योग (मासिक)

प्रकाशन का चौदहवाँ वर्ष।
विश्वस्त जानकारी के आधार पर ग्राम विकास की समस्याओं और सम्भाव्यताओं पर चर्चा करनेवाली पत्रिका। खादी और ग्रामोद्योग के अतिरिक्त ग्रामीण उद्योगीकरण की सम्भावनाओं तथा शहरीकरण के प्रसार पर मुक्त विचार-विमर्श का माध्यम।
ग्रामीण धंधों के उत्पादनों में उन्नत माध्यमिक तकनालाजी के संयोजन व अनुसंधान-कार्यों की जानकारी देनेवाली मासिक पत्रिका।

वार्षिक शुल्क : २ रुपये ५० पैसे
एक अंक : २५ पैसे

जागृति (पाक्षिक)

(संपादक—जगदीश नारायण वर्मा)

हिन्दी और अंग्रेजी में समानांतर प्रकाशित

प्रकाशन का बारहवाँ वर्ष।
खादी और ग्रामोद्योग कार्यक्रमों सम्बन्धी ताजे समाचार तथा ग्रामीण योजनाओं की प्रगति का मौलिक विवरण देनेवाला समाचार पाक्षिक। ग्राम-विकास की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करनेवाला समाचार-पत्र।

गाँवों में उन्नति से सम्बन्धित विषयों पर मुक्त विचार-विमर्श का माध्यम।

वार्षिक शुल्क : ४ रुपये
एक प्रति : २० पैसे

अंक-प्राप्ति के लिए लिखें

"प्रचार निर्देशालय"

खादी और ग्रामोद्योग कमीशन, 'ग्रामोदय'

इर्ला रोड, विलेपार्ले (पश्चिम), बम्बई-५६ एएस

www.vinoba.in

पटना में सर्वोदय का मतदाता-शिक्षण-अभियान शुरू

'वोट किसे देना है ?' इस प्रश्न पर विचार करने के लिए ८ दिसम्बर को ३ बजे पटना के हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन भवन में श्री जयप्रकाश नारायण के आमंत्रण पर प्रमुख नागरिकों तथा सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की एक बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता मुजफ्फरपुर पंचायत परिषद् के अध्यक्ष तथा भूतपूर्व अध्यक्ष, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, ने की। उनके अलावा उपस्थित थे 'सर्च लाइट' और 'आर्यावर्त' के सम्पादक, पटना कालेज के प्रिंसिपल, विश्वविद्यालय के अन्य कई प्रोफेसर तथा नागरिक और कार्यकर्ता। सबसे पहले जयप्रकाशजी ने मतदाता-शिक्षण-अभियान की भूमिका प्रस्तुत की। उसके बाद कई लोगों ने अपने विचार प्रकट किये। सबने इस अभियान का स्वागत किया। इस बात पर सभी एक राय थे कि वोट सबसे अच्छे उम्मीदवार को ही देना चाहिए। पार्टियों का अब कोई अर्थ नहीं रह गया है। जाति और सम्प्रदाय आदि की तो बात ही नहीं की जा सकती।

अन्त में एक समिति नियुक्त हुई जो इस अभियान को व्यापक पैमाने पर चलाने का कार्यक्रम बनायेगी। इस तरह की समितियाँ जिला तथा ब्लाक-स्तर तक बनेगी। •

गांधी-शताब्दी वर्ष १९६८-६९

गांधी-विनोबा के ग्राम-स्वराज्य का संदेश गाँव-गाँव, घर-घर
पहुँचाने के लिए निम्न सामग्री का उपयोग कीजिए :

पुस्तकें—

१. **जनता का राज :** लेखक—श्री मनमोहन चौधरी, पृष्ठ ६२, मूल्य २५ पैसे
२. **Freedom for the Masses :** लेखक—श्री मनमोहन चौधरी : 'जनता का राज' का अनुवाद, पृष्ठ ७६, मूल्य २५ पैसे
३. **शांति-सेना परिचय :** लेखक—श्री नारायण देसाई, पृष्ठ ११८, मूल्य ७५ पैसे
४. **हत्या एक आकार का :** लेखक—श्री ललित सहगल, पृष्ठ ९६, मूल्य ३ रु० ५० पैसे
५. **A Great Society of Small Communities :** ले० सुगत दासगुप्ता, पृष्ठ ७८, मूल्य १० रु०

फोल्डर—

१. गांधी : गाँव और ग्रामदान
२. गांधी : गाँव और शांति
३. ग्रामदान : क्यों और कैसे ?
४. ग्रामदान : क्या और क्यों ?
५. ग्रामदान के बाद क्या ?
६. ग्रामसभा का गठन और कार्य
७. गाँव-गाँव में खादी
८. सुलभ ग्रामदान
९. देखिए : ग्रामदान के कुछ नमूने
१०. गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम

पोस्टर—

१. गांधी ने चाहा था : सच्चा स्वराज्य
२. गांधी ने चाहा था : स्वावलम्बन
३. गांधी ने चाहा था : अहिंसक समाज
४. ग्रामदान से क्या होगा ?
५. गांधी जन्म-शताब्दी और सर्वोदय-पर्व

प्रदेश के सर्वोदय-संगठनों और गांधी जन्म-शताब्दी समितियों से सम्पर्क करके
यह सामग्री हजारों-लाखों की तादाद में प्रकाशित, वितरित कराने का प्रयत्न करना चाहिए।

शताब्दी-समिति की गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति, टुंकलिया भवन,
कुन्दीगरों का भैरु, जयपुर—३ (राजस्थान) द्वारा प्रसारित।

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।

www.vinoba.in

इस अंक में

सावधान, चुनाव आ गया !
अच्छे लोग
भ्रम की शिकार : एकता
जाति नहीं, जातिवाद मिटे
सत्यं शिवं सुन्दरम् यानी ग्रामदान
सेवक की वृत्ति
रसोई-घर की कुछ खास बातें
घर की लक्ष्मी !
ग्रामदान के आधार पर ग्रामविकास का प्रयास

१६ दिसम्बर, '६८

वर्ष ३, अंक ९] [१८ पैसे

सावधान, चुनाव आ गया !

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महोदय ने पुलिस-अधिकारियों को, प्रशासन के कर्मचारियों को चेतावनी दी है कि चुनाव आ गया है, सब लोग सावधान हो जायं ! क्यों भाई, चुनाव के आने पर पुलिस को, प्रशासक को इतनी चिन्ता क्यों ? चुनाव आया है तो जनता जिसे चाहेगी अपना वोट देकर चुन देगी, वोट के बक्से, कागज के टुकड़े और निशान लगाने के ठप्पे के साथ पुलिस का क्या सम्बन्ध ?

शायद इसलिए कि हर दल के नेताओं ने अपने कार्यकर्ताओं को आगाह कर दिया है कि, "सावधान, चुनाव आ गया है !" और शायद दलों के ये कार्यकर्ता चुनाव की तैयारी में जरूरत की सारी चीजें जुटाकर लग गये हैं। जरूरत की चीजों में झण्डे हैं, डण्डे हैं, वोटरों को तरह-तरह से फुसलाने, बहकाने, दबाने, लुभाने के हथकण्डे हैं ; लेकिन यह सब क्यों ? क्यों न हर उम्मीदवार खुद वोटरों के पास जाय, या अपने प्रतिनिधि भेजे, जाकर अपनी बात साफ-साफ बताये, और निर्णय के लिए 'वोटर' को खुला छोड़ दे ? तभी न सही माने में सरकार का जो तंत्र बनेगा, वह 'लोक' की राय से बना हुआ होगा, यानी सच्चा 'लोकतंत्र' होगा ?

लेकिन यह तो तब हो, जब कि 'वोटर' पर वोट माँगने-वालों का भरोसा हो। भरोसा तो सबको है 'डण्डे' पर, रुपये की थैली पर, और भी न जाने किन-किन चीजों पर ! नतीजा क्या है ? चुनाव के आते ही समाज में शान्ति और सुरक्षा की समस्या पैदा हो जाती है। 'चुनाव' एक लड़ाई-झगड़ेवाला नाटक भर रह जाता है। 'लोकतंत्र' का तन जर्जर हो रहा है, और 'डण्डे' का जोर बढ़ रहा है। लोकतंत्र की शुरुआत हुई थी इसलिए कि समाज में लोगों की सम्मति से काम हो, चाहे वह पुलिस का हो या गुण्डे का, डण्डे का जोर खत्म हो। लेकिन

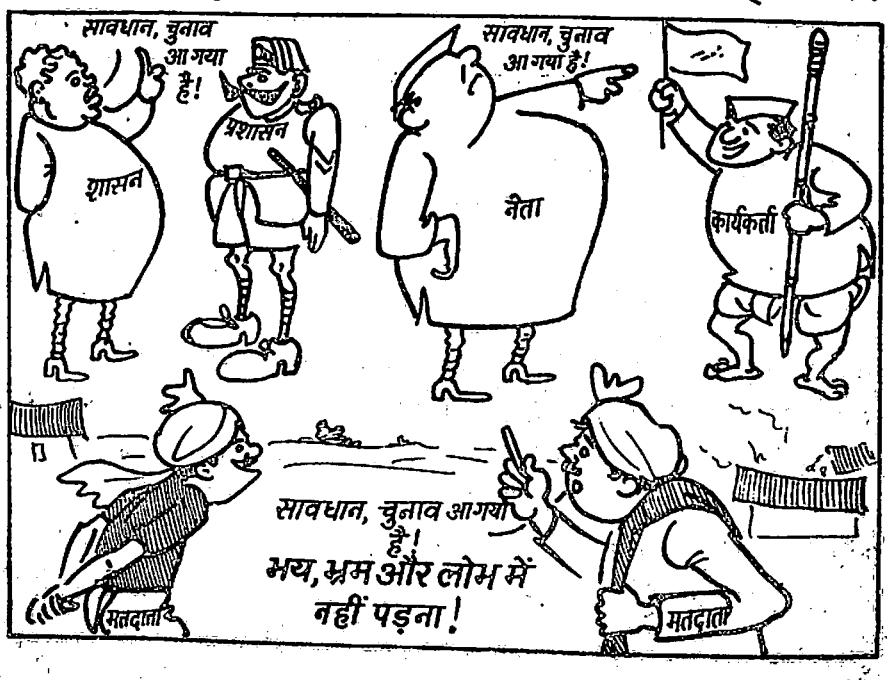

www.vinoba.

अच्छे लोग

प्रश्न : आपने कहा है कि अच्छे उम्मीदवार को वोट दिया जाय, लेकिन हम देख रहे हैं कि चारों ओर पार्टी की ही आवाज लग रही है। पार्टी से अलग हटकर किसीके लिए 'स्वतंत्र' उम्मीदवार होना भी कठिन हो गया है। 'स्वतंत्र' उम्मीदवार खर्च कहाँ से लाये, कार्यकर्ता और साधन कहाँ से जुटाये? वह तो बिलकुल असहाय हो जाता है। ऐसी हालत में आपके बताने के अनुसार कितने 'अच्छे' उम्मीदवार चुने जा सकेंगे?

उत्तर : आपका कहना सही है। इस काम में कठिनाइयाँ हैं, यह जाहिर है। लेकिन यह भी सही है कि दलों के दलदल से जनता ऊब गयी है। सामान्य लोगों के ही नहीं, सभी तरह के लोगों के मन में यह सवाल उठ रहा है कि इस दलदल से निकलने का कोई उपाय भी है या नहीं। जो लोग आगे की बात सोचते हैं वे तो यहाँ तक कहने लगे हैं कि पिछले बीस वर्षों में जिस तेजी के साथ सरकार की सत्ता बढ़ी है, और उस सत्ता के लिए दलों में जिस तरह छीना-झपटी होती जा रही है, और देश की जनता के सामने खड़े-खड़े तमाशा देखने के सिवाय दूसरा कुछ रह नहीं गया है, वह देश के लिए बहुत बड़ा खतरा है। देश के विकास के लिए यह जरूरी है कि सरकार की सत्ता कम हो, और नित-दिन का काम जनता आपस में मिलकर चलाना सीखे। अगर सरकार की सत्ता घटेगी तो उसकी शक्ति बढ़ेगी, और तब उसके जिम्मे जो काम होंगे उन्हें वह आज के मुकाबिले कहीं ज्यादा अच्छी तरह पूरा कर सकेगी। ये बातें ऐसी हैं जो जनता के सामने रखी जानी चाहिए। अगर हम इन बातों को नहीं सोचेंगे, और सोचकर सही काम नहीं करेंगे, तो परिणाम देश के लिए, और हम सब लोगों के लिए, बहुत बुरा होगा।

प्रश्न है, यह बात तो है, लेकिन तुरत क्या किया जाय? 'अच्छे उम्मीदवार को वोट दो', और ग्रामदान करके गाँव-गाँव का संगठन बनाओ; ये ही दो काम हैं जो समाज में नयी लहर पैदा कर सकते हैं। जरूरत है एक बार जनता के सोचने की, दिशा को बदलने की। 'अच्छे उम्मीदवार' के नारे से लोगों के सोचने की दिशा बदलेगी, इसमें कोई शक नहीं। इस वक्त सबसे बड़ी बात यह है कि लोग दल से अलग हटकर सोचने लग जायँ। क्या आप नहीं मानते कि इस नारे से यह काम होगा?

प्रश्न : मानता हूँ, होगा। इस काम को करना चाहिए, और 'अच्छे उम्मीदवार' की बात वोटरों के पास पहुँचनी चाहिए। आज हमलोगों के दिलों को दल और जाति ने घेर रखा है। इस नये नारे से इतना तो होगा कि हम आदमी और उसकी अच्छाई को देखना शुरू कर देंगे। आदमी की नजर में आदमी की कद्र होने लगे तो यह अपने में बहुत बड़ी बात होगी, और इस एक अच्छाई में से दूसरी अनेक अच्छाइयाँ पैदा होंगी। लेकिन एक बात बताइए। सरकार तो दलों से बनती है, 'अच्छे' लोगों को लेकर कैसे बनेगी? यह बात जरा साफ-साफ बताइए।

उत्तर : देखिए, आज यह होता है कि दल और जाति के नाम में अच्छे लोग भी चुने जाते हैं, और बुरे लोग भी। बल्कि कई बार तो ऐसा होता है कि छोटे या कमजोर दल का अच्छा आदमी हार जाता है, और बड़े दल का निकम्मा आदमी जीत जाता है। अगर आप सब लोग 'अच्छे उम्मीदवार' को ही वोट दें तो सब अच्छे लोग चुने जायेंगे, चाहे वे जिस दल या जाति के हों।

प्रश्न : अगर किसी निर्वाचन-क्षेत्र में कोई अच्छा उम्मीदवार न हो तो?

उत्तर : वोटर को वोट देने का जितना अधिकार है, उतना ही न देने का भी अधिकार है। लेकिन आज लोगों की यह तैयारी नहीं है कि घोषणा करके संगठित रूप से वोट न देने के अधिकार का इस्तेमाल करें।

प्रश्न : अगर ऐसा हो सकता तो किसी निकम्मे उम्मीदवार को खड़ा होने की हिम्मत ही न होती। लेकिन उस तरह की जागृति कहाँ है, संगठन कहाँ है? छोड़िए उस बात को। सरकार बनाने की बात बताइए।

उत्तर : सरकार बनना बिलकुल आसान है। आज भी एक दल की सरकार नहीं बन पाती है। यह निश्चित है कि इस चुनाव के बाद भी मिली-जुली ही सरकार बनेगी। जब ऐसी ही सरकार बननेवाली है तो क्या यह अच्छा नहीं होगा कि अच्छे लोगों की मिली-जुली सरकार बने?

ऐसा हो नहीं रहा है। चुनाव आया तो पुलिस अपने 'डण्डे' सँभालकर सावधान हो जाती है, और गुण्डे अपने!

इसीलिए अब जरूरत है कि 'वोटर' भी सावधान हो जाय। वह सावधान हो जाय कि उसका 'वोट' न तो बिकेगा, और न दबेगा! तभी उसके 'वोट' में शक्ति आयगी, और 'डण्डा-थैली' का बोलबाला खत्म हो सकेगा।•

भ्रम की शिकार एकता

www.vinoba.in

जिस दिन गाँव के ३०० लोगों ने ग्रामदान के कागज पर दस्तखत कर दिये, उसी दिन आपस-आपस में यह भी तय कर लिया गया कि सबसे जरूरी बात तो यह है कि पूरे गाँव के लोग बीच-बीच में एकसाथ मिलकर बैठा करें। इस तरह से आपसी अपनापा बढ़ेगा, और मेलजोल से गाँव की समस्याएँ हल करने में आसानी होगी। लेकिन पूरे गाँव का एकसाथ जुटना और मिलकर बैठना कोई मामूली बात नहीं है। गाँव के कई लोगों में सालों से आपस में बोलचाल, खान-पान, आना-जाना सब कुछ बन्द है। यों तो एकसाथ रहने पर खटपट हो ही जाया करती है, लेकिन इस तरह की बातें एक ओर से आती हैं, और दूसरी ओर से निकल जाती हैं। फिर भी कुछ झगड़े रगड़े का रूप लेते हैं, खासकर जब बात अदालत तक पहुँच जाती है।

गाँव के रगड़े-झगड़े को तूल देकर लोगों के कान फूँक-कर, बढ़ा-चढ़ाकर चुगली करने की आदत भी कुछ लोगों की हो जाती है। कुछ थोड़े पढ़े-लिखे लोग, जिनकी पहुँच पटवारी, दारोगा, वकील, मुखतार तक हो जाती है, ऐसे लोगों का तो धंधा ही एक तरह से हो जाता है झगड़ा लगाने का, और फिर उन्हें कचहरी तक पहुँचाने का। इस तरह से कई लोगों की रोजी भी चल जाती है, और 'पहुँचवाले हैं' इस तरह की प्रतिष्ठा भी हासिल हो जाती है।

इस गाँव के हरिकिशुन की भी यही आदत है। महीने-दो महीने में एकाध 'केस' न बना लें, तो पेट का पानी न पचे। मजा यह कि गाँव में किसी भी मेल-जोलवाले को, चाहे कितनी भी घनिष्ठता क्यों न हो, चुनौती देकर झगड़ा लगाते हैं। और उनकी बुद्धि का कमाल तो यह है कि सब लोग जानते हैं, कि हरिकिशुन पहले दर्जे का चुगलखोर है, फिर भी लोग लड़ पड़ते हैं।

कुछ साल पहले की बात है। हरिकिशुन गाँव की एक बारात से लौट रहा था। साथ में गाँव के युवकों की टोली थी। पास के छोटे-से शहर के स्टेशन पर आकर गाड़ी पकड़नी थी। लड़कीवाले की ओर से सबको वापस आने का खर्च मिला था। सबकी जेबें गर्म थीं। हरिकिशुन ने अलग-अलग कई युवकों के कान में यह बात डाल दी कि 'शहर में बढ़िया सिनेमा लगा है। खेल देखकर चलेंगे। पैसे की चिन्ता नहीं करनी है। रात की गाड़ी से निकल चलेंगे, एक टी० टी० बाबू से अपनी दोस्ती है, कह देने से काम चल जायेगा।'

सिनेमा का लोभ, बिना टिकट पहुँचा देने की गारण्टी, फिर और क्या चाहिए था? बात कानों-कान फैल गयी, और हरिकिशुन के नेतृत्व में आठ-दस युवकों के दल ने रात को नौ से बारह बजे तक सिनेमा देखा, स्टेशन के पास की सरदारजी के होटल में डटकर भोजन किया और 'नम्बर टेन' सिगरेट की फूँक मारते हुए गाड़ी में आकर सब बैठ गये। चार बजे भोर में जब गाड़ी स्टेशन पर रुकी और सब लोग अलसाये-से उतरे तो हरिकिशुन का कहीं पता ही नहीं, सब लोग परेशान कि अब क्या होगा? गाड़ी चली गयी। छोटा-सा स्टेशन, आठ-दस आदमियों का झुण्ड देखकर टिकट माँगनेवाला आ धमका। अब क्या हो? सबने आखिर झूठ का सहारा लिया—'पैसा एक ही आदमी के पास था, उसकी जेब कट गयी, मजबूर होकर हमें बिना टिकट आना पड़ा।'

'सब झूठे हैं! पैसे सबके पास थे। सिनेमा देखकर मौज उड़ाते चले आ रहे हैं। बाप की गाड़ी समझ ली है! आखिर मैं भी तो इनके साथ ही बारात से आ रहा हूँ।' सुनकर और

प्रश्न : जरूर अच्छा होगा। आज जो हालत है उससे बहुत अच्छी हालत होगी।

उत्तर : लेकिन यह मान लेने की भूल मत कीजिएगा कि अच्छे लोगों की मिली-जुली सरकार से हमारे सब सवाल हल हो जायेंगे।

प्रश्न : क्यों?

उत्तर : हो सकता है कि ये अच्छे लोग ईमानदार ज्यादा हों, मेहनती हों, जनता का भला चाहनेवाले हों, लेकिन वे अपने मन से अपने दल का पक्षपात न निकाल सकें, या उनका एक मिला-जुला कार्यक्रम न बन सके। उन्हें दूसरी बातें छोड़कर एक मिले-जुले व्यावहारिक कार्यक्रम की ही बात सोचनी चाहिए।

प्रश्न : अगर ऐसा न हुआ तब तो यह सरकार भी टूट जायेगी?

उत्तर : जरूर टूट जायेगी।

प्रश्न : तो फायदा क्या होगा?

उत्तर : यह होगा कि जनता का दिल साफ होगा। उसके अन्दर दल और जाति का जो जहर घुसा हुआ है वह काफी निकल जायगा। जनता समझ जायेगी कि सरकार की, राजनीति की, चुनाव की सारी व्यवस्था और रचना ही सड़ गयी है। उस व्यवस्था को बदलना जरूरी है। दल के दलदल को समाप्त किये बिना गुजर नहीं है। तब अच्छे उम्मीदवार की जगह अपने उम्मीदवार की बात आसानी से समझ में आयेगी।

स्टेशन पर जल रही गैस की रोशनी में यह देखकर सबें लोग दंग रह गये कि हरिकिशुन स्टेशन के बाहर खड़ा-खड़ा ललकार रहा है।' तब बात सबकी समझ में आयी। लेकिन तब कर भी क्या सकते थे? पूरे चौबीस घंटे सबको हवालात की हवा खानी पड़ी। उधर हरिकिशुन ने गाँव में जाकर हल्ला कर दिया कि सबको सजा हो जायगी, इसलिए जल्दी जमानत पर छुड़ाने का इंतजाम होना चाहिए। घरों में तहलका मच गया। सबने हरिकिशुन की खुशामद शुरू की। काफी समय तक रोब जमाने के बाद हरिकिशुन ने स्टेशन जाकर कुछ दे-दिलाकर और बीच में ही कुछ अपनी जेब भरकर सबकी छुट्टी करायी। कमाई की कमाई, एहसान का एहसान!

ग्रामदान हो जाने पर सबसे अधिक परेशानी इस बात की थी, कि अगर गाँव में एकता आ जायगी, सब लोग मिल-जुलकर रहने की कोशिश में लगेंगे, तो उसके धंधे का क्या होगा? दस्तखत करने में हरिकिशुन पीछे नहीं था, लेकिन वह तो सिर्फ एक चाल भर थी। वह जानता था कि घुसपैठ करके ही काम निकालना आसान होता है, सीधा आक्रमण करने पर तो सतर्क हो जाने की गुंजाइश रह जाती है।

ग्रामदान के बाद हरिकिशुन ने सबसे पहला काम यह किया कि एक जबरदस्त अफवाह फैला दी—"ग्रामदानी गाँवों को सीधे दिल्ली की सरकार से बहुत-सा रुपया मिलता है। ग्रामदानी गाँव के विकास के लिए सरकार खास तौर पर मदद करती है। और उस सारे काम की ठीकेदारी ग्रामदानी ग्रामसभा के अध्यक्ष को मिलती है। उसमें काफी लाभ होता है।" इस बात का भरोसा दिलाने के लिए हरिकिशुन ने अखबार का हवाला दिया। निरंजन बाबू वकील और घनश्याम बाबू बी० डी० ओ० का नाम लिया।

योजना यह थी हरिकिशुन की, कि इससे कई लोगों के मन में अध्यक्ष बनने का लोभ उपजेगा, और वही लोभ इनकी ऊपर-ऊपर दीखनेवाली एकता को तोड़ देगा।

और हरिकिशुन का अंदाज गलत नहीं निकला। अगली पूर्णिमा को तय हुआ था कि पूरे गाँव की सभा बुलाकर अध्यक्ष चुना जाय, कार्यसमिति बने और आगे के काम पर विचार हो। लेकिन इस बीच हरिकिशुन के द्वारा उड़ायी गयी अफवाह इतनी जोरदार हो गयी थी, कि भीतर-ही-भीतर गाँव में तनाव बढ़ता जा रहा था, बढ़ता ही जा रहा था।

'अब सबकी राय से ग्रामसभा कैसे बनेगी?' यह जबरदस्त शंका पैदा हो गयी थी कइयों के मन में!

[एकता टूटते-टूटते बची। कैसे?....अगले अंक में पढ़ें।]

उलझाव और सुलझाव

जाति नहीं, जातिवाद मिटे

प्रश्न : भारत से जातिवाद कभी समाप्त हो नहीं सकता। आपके क्या विचार हैं?

विनोबा : भारत से जातिवाद समाप्त हो सकता है। आज भी हो सकता है। लेकिन जाति समाप्त नहीं हो सकती। जातिवाद यानी मेरी जाति ऊँची दूसरे की जाति नीची, ऐसे जाति का अहंकार। दूसरा अर्थ यह है कि मेरी जाति को दुनिया में बढ़ावा मिलना चाहिए और दूसरी जातिवाले कमजोर रहें। और तीसरा अर्थ कि वोट देना है तो अपनी जाति को दूँगा, दूसरी जाति को नहीं दूँगा, इत्यादि। इन सबका अर्थ जातिवाद है। यह मिट सकता है और मिटना चाहिए और जल्द-से-जल्द मिटना चाहिए। और मुझे लगता है कि वह काफी मिटा है, लेकिन थोड़ा बचा है। यह जो थोड़ा बचा है, वह भी तकलीफ देगा। शरीर में छोटा-सा कांटा गया तो वह भी तकलीफ देता है। इसलिए जो जातिवाद बचा है उसे जल्द-से-जल्द खतम होना चाहिए।

मैंने कहा कि जातियाँ मिट नहीं सकतीं, क्योंकि वह हिन्दुस्तान की विशेषता है। दुनिया में यह और कहीं नहीं है। इसका मतलब यह नहीं कि एक जातिवाला दूसरी जातिवाले से शादी न करे। वह तो पहले भी होता था। जहाँ दो भाई एक ही विचार के होते हैं, भले भिन्न-भिन्न जाति के हों, एक ही विचार के हैं, मांसाहारी नहीं, शाकाहारी हैं, ऐसी शादियाँ हुई हैं। जाति के कारण वंश-परम्परा के कुछ गुण आते हैं। इसलिए पिता-माता का धंधा ही बच्चे करें तो काम बहुत अच्छा हो सकता है और सहज हो सकता।

यह मूलभूत विचार जाति के पीछे पड़ा है। भिन्न-भिन्न जातियों में शादी हुई, हिन्दू-मुसलमान इन दो धर्मों में भी शादी हुई तो हर्ज नहीं, बशर्ते कि दोनों समान विचार रखते हों, दोनों ने मांसाहार छोड़ा हो, दोनों एक परमात्मा की भावना रखते हों, दोनों एक ही विचार को मानते हों। लेकिन अकसर दोनों के संस्कार भिन्न होते हैं। इसलिए ब्राह्मण सोचता होगा कि मेरी लड़की ऐसे घर में जाय जहाँ उसे गोश्त-ओश्त पकाना न पड़े। तो सामान्यतया वह हरिजन के साथ शादी नहीं करायेगा। ब्राह्मण, हरिजन, दोनों के संस्कार समान हों तो शादियाँ होने में पहले भी अड़चन नहीं थी और आज भी नहीं। यह अब इंग्लैंड में भी चला है। वहाँ कुछ लोग अब शाकाहारी हुए हैं। तो सहज ही कोशिश करते हैं कि हमारी लड़की शाकाहारी के घर में जाय।

यह सारा मैंने इतने विस्तार से कहा वह इसलिए कि हमें समझना चाहिए कि जाति-संस्था में कुछ गुण होते हैं।

सत्यं शिवं सुन्दरम् यानी ग्रामदान

प्रश्न : सत्यं शिवं सुन्दरम् का अर्थ समझाने की कृपा करें।

विनोबा : सत्यं शिवं सुन्दरम् की व्याख्या यानी ग्रामदान। सत्य यानी आज जिसकी अत्यन्त आवश्यकता है। यह वस्तुस्थिति है जिसको कि हम छोड़ नहीं सकते। हिन्दुस्तान की गरीबी परम सत्य है। ग्रामदान में सत्य-निष्ठा है। दूसरी बात, ग्रामदान में प्रेम से माँगा जाता है, कम्युनिज्म में सिर काटकर माँगा जाता है। इसलिए वह शिवं है यानी कल्याणकारी है। तीसरी बात सुन्दरम्। हर गाँव सुन्दर तब होगा जब ग्रामदान होगा। हरेक के पास जमीन होगी, गाँव साफ होगा और एक परिवार के समान रहेगा। तो सत्यं शिवं सुन्दरम् यानी ग्रामदान। यह उसका उत्तम विवरण, व्याख्या आज की परिस्थिति में है।

ग्रामदान में क्या करना है? मिल्कियत गाँव की करनी है, भूमिहीनों को जमीन देनी है। लेकिन इतना ही नहीं, घर-घर में से असत्य हटाना है, प्रेम से रहना है और गाँव की कुरूपता मिटानी है, ऐसा सर्वांग सुन्दर ग्रामीण जीवन बनाना है। ऐसा सर्वांग सुन्दर ग्रामीण जीवन बनेगा तो शहरवाले उनके पीछे जायेंगे। आज गाँववाले शहरवालों के पीछे जाते हैं।

प्रश्न : करुणा और दया सम्पन्न लोगों के द्वारा असम्पन्न लोगों को मूर्ख बनाने के साधन हैं, जिससे उनकी क्रान्ति की भावनाएँ दबी रहें। सर्वोदय आन्दोलन भी इसीकी पूर्ति करता है, इसलिए यह पूँजीवाद का हथकण्डा है। ऐसा साम्यवादियों का कहना है। आपका क्या विचार है?

विनोबा : ऐसा साम्यवादियों का कहना था, अभी नहीं है। मेरा साम्यवादियों से काफी परिचय है और उन्होंने मुझे कहा है कि ग्रामदान-आन्दोलन जिस दिशा में जा रहा है उससे उत्तम मार्ग भारत में हो नहीं सकता। क्योंकि कम्युनिज्म की प्रतिक्रिया हो सकती है और इससे जो क्रान्ति होगी, उसकी प्रतिक्रिया नहीं होगी।

साम्यवादियों के शिरोमणि हैं नम्बूदरीपाद, और उन्होंने बाबा को व्यक्तिगत तौर पर कहा है और एलवाल में ग्रामदान के बारे में जो अखिल भारतीय कान्फरेंस हुई थी, उसमें भी कहा है कि मैं इस विचार को अत्यन्त मान्य करता हूँ। और मैं केरल में घुमा था चार-साढ़े चार महीना, तब कम्युनिस्टों ने मुझे साथ दिया था। तो केरल के कम्युनिस्ट पहले भी ऐसा नहीं कहते थे, बल्कि इसके उल्टा कहते थे। कम्युनिज्म में सत्ता सरकार के हाथ में आयेगी, उसके बाद क्रान्ति होगी और उनके हाथ में सत्ता कब आयेगी, इसकी कोई कल्पना वे कर नहीं सकते। इसलिए वे केवल स्वप्न में ही लीन हैं। और हमारा काम ग्रामों में हो रहा है। इसलिए अगर कम्युनिस्ट ऐसा मानते हों, तो वह उनका पुराना विचार है। आज वे ऐसा नहीं मानते।

सेवक की वृत्ति

प्रश्न : कुछ ऐसी संस्थाएँ हैं, जिनमें दूसरे नये विचारों के न ग्रहण करने के लिए दिमागबन्दी, दिलबन्दी के आदेश हों और उन संस्थाओं से सम्बन्धित जन न तो नया साहित्य लें और न बात करने का मौका दें, तो ऐसी स्थिति में क्या करें कि हमारे विचार को प्रवेश मिले?

विनोबा : इस प्रकार से प्रचार 'क्रिश्चियानिटी' करती है। लोगों को अपना साहित्य बेचते हैं, मुफ्त में भी बाँटते हैं। उनको विश्वास है कि लोगों के पास वह पहुँच जायेगा और उस पर आँखें पड़ेंगी तो वह इतना आकर्षक है कि उनका दिल खिंचा जायेगा। ऐसा विश्वास होना चाहिए कि दिल बन्द हो, दिमाग बन्द हो, फिर भी अगर आपका साहित्य आकर्षक है तो वह लोगों को आकर्षित करेगा। कलकत्ता के दातारामजी ऐसा करते हैं। वे किताब एकदम बेचते नहीं। पहले पढ़ने को देते हैं और एकाध हफ्ते के बाद उसके पास जाते हैं। बहुत करके तो वह खरीद ही लेता है। सोचता है कि ठीक है, बहुत ज्यादा महँगी तो है नहीं, और अच्छी भी है, तो क्यों वापस दी जाय। और कोई वापस देता है तो वे दुःखी नहीं होते। कहते हैं कि ठीक है, यह दूसरी देख लीजिए। यों करके दूसरी दे देते हैं, और उसका नाम-वाम लिख लेते हैं। कभी-न-कभी कोई किताब तो पसन्द आयेगी ही।

प्रचारक को दूसरे का दिल बन्द है, दिमाग बन्द है, ऐसा मानकर नहीं चलना चाहिए। यह समझकर चलना चाहिए कि हरएक का हृदय और दिमाग खुल ही जायेगा। और पहले कहीं छोटा-सा भी छिद्र हो तो देख लेना और उसमें से प्रवेश करने की कोशिश करना चाहिए। दरवाजा बन्द हो तो भी उसमें छिद्र तो होगा ही। भगवान सूर्यनारायण क्या करता है? दरवाजा बन्द होता है तो खड़ा रहता है। देखता है कि कहीं छोटा-सा छिद्र है, झरोखा है, तो अन्दर घुसता है। वह कितना असामान्य है और हम कितने सामान्य! फिर भी वह नम्र होकर अन्दर आने की कोशिश करता है। इसलिए दरवाजा बन्द हो तो भी वह भाग नहीं जायेगा। वह उस पर हाथ देकर खड़ा रहेगा और दरवाजा खुलते ही अन्दर चला जायेगा। यह सूर्य नारायण की वृत्ति सेवक की वृत्ति होनी चाहिए।

[गाँव के प्रमुख लोगों के साथ की चर्चा से, रामानुजगंज, २१-११-६८]

रसोई-घर की कुछ खास बातें

हमारे लिए जितनी साग-भाजी की आवश्यकता है, उतनी हमें मिलती नहीं, और जितनी थोड़ी मिलती है उसका हम अपने अज्ञान के कारण पूरा-पूरा उपयोग नहीं कर पाते। अगर नीचे बतायी बातों पर ध्यान दिया जाय तो हमें बिना अतिरिक्त पैसा खर्च किये ज्यादा साग-भाजी मिल जायेगी, और शरीर को पोषण देनेवाले पौष्टिक पदार्थ मिल जायेंगे।

मूली, गाजर, चुकन्दर तथा शलजम, ये ऐसी सब्जियां हैं जिनकी पत्तियों को अकसर फेंक दिया जाता है। दरअसल इनकी पत्तियां जड़ों से ज्यादा पौष्टिक होती हैं, क्योंकि इनमें खनिज तथा विटामिन होते हैं। इनकी पत्तियों से शोरवा, भुजिया या साम्बर जैसे कई व्यंजन बनाये जा सकते हैं। इन्हें बारीक काट-कर और आटे में गूंथकर इनकी स्वादिष्ट रोटियां तथा पराठे बनाये जा सकते हैं। मूली की पत्तियों में थोड़ा-सा नमक मिलाकर तथा नीबू निचोड़कर सलाद के रूप में खा सकते हैं। इसी तरह फूलगोभी तथा बन्द गोभी के पत्तों को भी उनके रेशे निकालकर खाने के काम में लाया जा सकता है।

बथुआ तथा चौलाई जैसे सागों को कुछ लोग हेय दृष्टि से देखते हैं। लेकिन दरअसल इन सागों में दूसरी सब्जियों के मुकाबिले पौष्टिक तत्त्व ज्यादा होते हैं।

मटर के छिलकों की बड़ी स्वादिष्ट सब्जी बनती है। इसकी सब्जी बनाने के लिए अन्दर का रेशा छील लेना चाहिए। इसकी सब्जी में आलू डालकर स्वाद बढ़ाया जा सकता है। सब्जियों को हमेशा काटने से पहले धो लेना चाहिए। काटने के बाद धोने से इनके विटामिन नष्ट हो जाते हैं। जहां तक बने उन्हें छिलके-सहित ही पकाना चाहिए। अगर छीलना जरूरी हो तो उनका हल्का छिलका उतारना चाहिए, क्योंकि कुछ सब्जियों के छिलकों में गूदे के जितने ही विटामिन होते हैं।

सब्जियों को अधिक पानी में ज्यादा देर तक पकाने से पौष्टिक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। इसके लिए सब्जियों को जरूरत भर पानी में ढककर पकाना चाहिए। इससे उनके पौष्टिक तत्त्व नष्ट नहीं होंगे। अगर सब्जी उबालनी हो तो उसके लिए पहले पानी को खौलाकर उसमें सब्जी डालनी चाहिए। इससे सब्जी में पौष्टिक तत्त्व बने रहते हैं।

सब्जियां पकाते समय पहले कुछ मिनट के लिए बर्तन को खुला रखें और फिर उसे ढक दें। इससे सब्जियों का अपना रंग, स्वाद तथा उनके पौष्टिक तत्त्व बने रहते हैं।

सब्जियों को भाप देकर पकाना सबसे अच्छा रहता है क्योंकि इस तरीके से उनके पौष्टिक तत्त्व कम मात्रा में नष्ट होते हैं। इसके बाद तन्दूर में पकाना अच्छा रहता है। इस तरीके से पकायी गयी सब्जियों में अधिकांश पौष्टिक तत्त्व बने रहते हैं और इन्हें पचाना भी आसान होता है। इसलिए बच्चों तथा बीमारों के लिए भाप से या तन्दूर में पका भोजन बताया जाता है।

मुलायम तथा कच्ची सब्जियों में पौष्टिक तत्त्व काफी मात्रा में होते हैं। खीरा, गाजर, टमाटर, अंकुर फूटे मूँग, हरी मटर, प्याज, मूली तथा सलाद की पत्तियां कच्ची ही खायी जा सकती हैं।

इसी प्रकार छाछ की भी बेकदरी की जाती है। लेकिन इसमें प्रोटीन तथा खनिज होते हैं जिनसे शरीर बनता है। छाछ में अगर थोड़ा-सा नमक, पिसा जीरा तथा पोदीना मिला लिया जाय तो अच्छा खासा रायता बन जाता है। अगर छाछ बहुत खट्टी है तो इसमें बेसन मिलाकर कढ़ी बनायी जा सकती है। छाछ को इस्तेमाल करने का एक दूसरा तरीका इसे रोटी के आटे में मिला लेना है। छाछ के गूंथे आटे में थोड़ी-सी कोई पत्तीवाली सब्जी काटकर मिला लीजिये और उसके पराठे बनाकर खाइए। वे बहुत स्वादिष्ट लगेंगे।

रोटियों के लिए आटा गूंथते समय अकसर गृहिणियां आटे को छानकर चोकर फेंक देती हैं। लेकिन ऐसा नहीं करना चाहिए। क्योंकि चोकर में विटामिन तथा खनिज काफी मात्रा में होते हैं जो छानने पर बेकार चले जाते हैं।

चावल पकाते समय इन्हें थोड़े पानी में धोइए। धोते समय इन्हें हाथ से रगड़ना नहीं चाहिए। चावलों को जरूरत भर पानी में उबालें। अगर फालतू पानी छानना पड़े तो इसके पानी को फेंकने के बजाय दाल में इस्तेमाल कर लीजिए। इसकी लप्सी भी बनायी जा सकती है। इसे थोड़ा-सा नमक मिलाकर तथा नीबू निचोड़कर पीने के काम भी लाया जा सकता है। पीने में यह स्वादिष्ट लगता है।

इस प्रकार गृहिणियां बहुत-सी चीजों को बेकार समझकर फेंकने के बजाय उनका पूरा सदुपयोग कर सकती हैं। इससे उनको तथा उनके परिवार के सदस्यों को पौष्टिक भोजन मिलेगा।

—अर्चना सूद

("फार्म फीचर" से)

बहिनजी की डायरी

घर की लक्ष्मी !

शाम हो गयी थी। अंधेरा फैल चुका था। गाँव में स्त्रियों का 'खेत की ओर' आना-जाना शुरू हो गया था। मैं रास्ते के पास ही खड़ी थी। देखा कि विमला अपनी ढाई-तीन साल की लड़की को साथ लेकर अकेली जा रही है। 'अब तुम अकेली ही जाती हो ?' – यह पूछने पर विमला खड़ी हो गयी। 'हाँ अकेली ही जाती हूँ, लेकिन अब बच्ची को साथ ले जाना पड़ता है। घर का कोई आदमी मेरे साथ नहीं जाता, और न तो घर में इसे सँभालता ही है। और, घर जल्द न लौटूँ तो अनर्थ होने लगे। क्या करूँ !

विमला गाँव के एक धनी-मानी घर की बहू है। करीब चार-पाँच साल हो गये शादी होकर आयी है। तब से ससुराल में ही है। चार देवरानी-जेठानी हैं; सास, ससुर, देवर, जेठ, सबसे भरा-पूरा परिवार है। मायके में भी परिवार बड़ा है, और सम्पन्न भी है।

'इस बच्ची को बाबूजी के पास छोड़ दिया होता !' इतना सुनते ही विमला कुछ झिझककर बोली, 'मेरे साथ चलिए तो मालूम हो। शायद आपको मालूम नहीं है कि इस घर में मेरी क्या हालत है। जी ऊब गया है। कहाँ चली जाऊँ, कैसे मर जाऊँ ! कौन जाने आपने सुना भी हो। मैं अपनी बेवकूफी अपनी जबान से क्या बताऊँ। घर में कई बार झगड़ा हुआ और सास ने मारा। उस समय यही इच्छा हुई कि न अब इनका मुँह देखूँ और न अपना इन्हें दिखाऊँ। एक बार मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगाने ही जा रही थी तब तक पति ने देख लिया। दूसरी बार ऐसा हुआ तो जहर खा लिया, लेकिन उससे भी मौत नहीं आयी। बीमार हो गयी, फिर इलाज हुआ, ठीक हो गयी। अभी थोड़े दिनों की बात है कि एक दिन सास से झगड़ा हो गया। सास ने मारा। जेठ और जेठानी ने मारा। फिर पति से घरवालों ने कहकर मरवाया। उस समय जैसे मैं पागल हो गयी। लड़की लेकर घर से बाहर निकलने लगी। सोचा, रात है कहीं डूब मरूँगी। वह भी न कर पायी। ससुर ने और सास ने मिलकर मुझे पकड़कर खम्भे से बाँध दिया। घंटों बाद खोला। इच्छा नहीं होती कि अब दुनिया में रहूँ, लेकिन क्या करूँ, मर भी नहीं पाती हूँ। बात पूरी करते-करते विमला फूट-फूटकर रो पड़ी।

'तुम्हारे पति कुछ करते नहीं, जब घर के लोग मारते हैं ?'

'पहले तो वह खुद कभी नहीं मारते थे, बल्कि मुझे समझाते थे और खाने-पीने को भी कहते थे। वह कर भी क्या सकते हैं ? उनकी कुछ चल नहीं सकती। अब तो वह भी चुप रह जाते हैं, चाहे जो होता रहे। बैल की तरह कमाना और खाना है, और कुछ नहीं।' विमला ने कातर होकर उत्तर दिया।

'तुम कुछ दिनों के लिए अपने मायके क्यों नहीं चली जाती हो ?' 'मायके में भी मेरे अपने माँ-बाप नहीं हैं। भाई-भौजाई हैं। बरसों बीत गये, जब से मैं आयी हूँ, अभी तक कभी बुलाया नहीं। उस दिन जो झगड़ा हुआ उसके दूसरे दिन मेरे भाई को आदमी भेजकर ससुर ने बुलाया। जितनी शिकायत कर सकते थे, उनसे की।'

'तुमसे भाई ने चलने को नहीं कहा ?' रोते-रोते बोली : 'भैया ने तो कहा कि तुमको इसी घर में रहना है, चाहे ये लोग तुम्हारा कुछ भी कर डालें। इस घर से मैं तुम्हारी लाश ले जा सकता हूँ, तुमको नहीं। तुम घुट-घुट के मर जाओ, परन्तु हमारी नाक मत कटाओ।' उस दिन से जो कुछ भी होता है चुपचाप सब सह लेती हूँ। किसके भरोसे बोलूँ ? पति को समझ लिया, भाई को भी देख लिया। किसी तरह जिन्दगी के दिन पूरे करना है। इतना ताना-मेहना सुनना पड़ता है कि कलेजा चलनी हो गया है।'

विमला इतना ही कह पायी थी कि दूर कहीं सास की आवाज सुनाई दी। वह कदम बढ़ाकर चली गयी। गाँव की किसी औरत से वह बात नहीं करने पाती। यही एक समय है जब वह घर से बाहर 'खेत की ओर' निकल पाती है और किसीसे कुछ कहकर अपना मन हल्का करती है। जरा देर हुई कि सास निगरानी के लिए निकल पड़ती है।

विमला तो चली गयी, पर मैं सोचती रही कि वह भाई और ससुर की नाक रखने के लिए घुट-घुटकर मर रही है। न वह अपने लिए जी रही है, न अपने लिए मर सकती है। वह अपने में कुछ है ही नहीं। ससुराल या मायका, उसे कहीं ठिकाना नहीं है। मैं अपने ही गाँव में देखती हूँ विमला अकेली नहीं है। इसी को जीते-जी मरना कहते हैं। न जाने कब तक स्त्री को इस घुटन और बेबसी का जीवन जीना पड़ेगा ?

www.vinoba.in

अपनी दुनियाँ

ग्रामदान के आधार पर ग्रामविकास का प्रयास

हमलोग जब पुब्बिलिया गाँव के स्कूल में पहुँचे तो स्कूल की छुट्टी का समय हो रहा था। बच्चों को किताब के थैले के साथ फावड़ा ले जाते हुए देखकर मुझे कुछ कुतूहल हुआ। मैंने श्री जिमोनीज से पूछा कि ये बच्चे फावड़ा क्यों लिये हैं?

जिमोनीज मुस्कुराते हुए बोले: "इस स्कूल का हरेक बच्चा रोज पुस्तकों के साथ फावड़ा भी लाता है, क्योंकि शरीर-श्रम भी पढ़ाई का एक अंग है।" वे पुब्बिलिया गाँव के स्कूल के प्रधान शिक्षक हैं।

पुब्बिलिया गाँव में ८७ परिवार रहते हैं, जिनमें ७६ भूमिवान और ११ भूमिहीन हैं। गाँव में खेती लायक करीब ६०० एकड़ जमीन है, ५०० जनसंख्या है। ७ माह पहले श्रीलंका-सरकार की तरफ से एक बाँध बनाने की योजना बनायी गयी थी। इस योजना के अन्तर्गत तीन गाँव, जिनका क्षेत्रफल करीब १२००एकड़ होता है, इस बाँध के पेट में समा जानेवाले थे। बाँध बनने पर करीब १५०० एकड़ जमीन दो-तीन बड़े-बड़े जमींदारों की बचती थी; अतः गरीबों को बाँध के पेट में झोंककर जमींदारों को ही लाभ होनेवाला था। वास्तव में बात यह थी कि सिंचाई-विभाग के विशेषज्ञों ने यह योजना जमींदारों के सुझाव पर कोलम्बो में ही बैठकर बना ली थी। उस स्थान पर कोई नहीं गया था।

स्कूल-शिक्षक श्री जिमोनीज को जब यह सारा किस्सा मालूम हुआ तो उन्होंने गाँव के लोगों को इकट्ठा किया और कहा कि हम सब मिलकर यदि इस बात को सरकार के पास पहुँचायेंगे तो हमारी बात जरूर सुनी जायेगी। लेकिन हाँ, हम सबको मिलकर रहना होगा और सबके भले की दृष्टि से काम करना होगा। इसी सिलसिले में उन्होंने गाँववालों को सर्वोदय तथा ग्रामदान की बात बतायी, तथा सर्वोदय-केन्द्र की स्थापना की। सर्वोदय-केन्द्र के मार्फत बाँध-योजना का विरोध किया गया, क्योंकि वास्तव में कर्मचारियों ने मौके पर आकर योजना नहीं बनायी थी, इसलिए बाँध बनाने की वह योजना स्थगित हो गयी। इस प्रकार से गाँववालों को अपनी सामूहिक शक्ति का दर्शन हुआ। अब श्री जिमोनीज के मार्गदर्शन में इस सामूहिक शक्ति ने ग्राम-निर्माण का काम शुरू किया। पहला निर्णय इन लोगों ने यह किया कि गाँव की सारी जमीन सर्वोदय की है, अतः जमीन पर भूमिहीनों का भी अधिकार है।

इस संगठित सामूहिक शक्ति के आधार पर गाँव में छोटे-छोटे दो तालाबों का निर्माण हुआ। मुख्य सड़क से गाँव को जोड़ने के लिए डेढ़ मील की एक सड़क बनायी गयी। गाँव में पानी का बहुत अभाव है, अतः कुएँ खोदने का आन्दोलन यहाँ शुरू हो गया है। कुआँ अपने श्रम से खोद लेते हैं और जिन लोगों के पास अधिक साधन नहीं हैं, उनको सीमेण्ट आदि की मदद सर्वोदय-केन्द्र की तरफ से दी जाती है। यह निधि एकत्र करने का एक अच्छा तरीका इन लोगों ने निकाला है। ७६ भूमिवान परिवारों ने अपने-अपने नारियल के बगीचे में एक-एक पेड़ सर्वोदय के लिए दे दिया है। जो पेड़ सर्वोदय के लिए निश्चित किया गया है उस पर 'सर्वोदय' लिख दिया है। इस प्रकार ७६ नारियल के वृक्ष सर्वोदय-कार्य के लिए दिये गये हैं। इन ७६ पेड़ों से हर दो माह बाद ४०० से ५०० के बीच नारियल मिलते हैं, अर्थात् साल में करीब २५० नारियल हुए। एक नारियल की कम-से-कम कीमत यहाँ २५ पैसे होती है, जिसका अर्थ होता है ६२५ रुपये प्रति साल। करीब ४०० रुपये इन वृक्षों के पत्ते आदि से मिलेगा। अतः साल में एक हजार रुपयों का सामान मिलेगा। इसके अलावा चार एकड़ धान का खेत और ढाई एकड़ सर्वोदय आश्रम बनाने के लिए जमीन दी है। ये लोग इस गाँव को ग्रामदान के आधार पर विकसित करना चाहते हैं।

इन लोगों के लिए सर्वोदय का सीधा-सा अर्थ है—सबकी भलाई की दृष्टि से किया गया काम। और, ग्रामदान का अर्थ है—सब मिलकर सोचें और मिलकर काम करें।

सर्वोदय के लिए दिये गये नारियल के वृक्ष तथा जमीन एक प्रकार से इन लोगों के लिए 'ग्रामकोष' का काम करते हैं। अभी तो स्कूल के प्रधान अध्यापक ही सारा संयोजन करते हैं, लेकिन धीरे-धीरे वे गाँव के कुछ जवानों को तैयार कर रहे हैं। रोज एक घण्टे के लिए गाँव के स्त्री-पुरुष स्कूल के हाल में इकट्ठे होते हैं। यहाँ लोक-शिक्षण की दृष्टि से विभिन्न विषयों की चर्चा होती है। एक प्रकार से स्कूल ग्राम-विकास का केन्द्र बना हुआ है।

हमलोगों के साथ भी कई विषयों पर चर्चा हुई। मलमूत्र का उपयोग, गोबर-गैस तथा वनस्पति से 'कंपोस्ट' बनाने की सब बातें इनके लिए बिलकुल नयी थीं। लेकिन ग्रामीणों ने काफी दिलचस्पी से चर्चा में भाग लिया।

—नरेन्द्र

'गाँव की बात' : वार्षिक चन्दा : चार रुपये, एक प्रति : अठारह पैसे।
सम्पादक : राममूर्ति : सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-१